आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ का मूल अंक 81, मई-जून 2012 पढ़ा, अच्छा लगा। मानचित्र और उनकी प्रेतात्माएँ - यमुना सन्नी का लेख विशेष रूप से पढ़ा। पेज नम्बर 44 पर स्थलाकृतिक नक्शे उपशीर्षक के अन्तर्गत लिखा है - ये नक्शे आम तौर पर 1:50,000 के पैमाने पर बनाए जाते हैं जिसके अर्थ होता है नक्शे पर 1 सेंटीमीटर, ज़मीन के 50 कि.मी. को दर्शाता है और इससे नक्शे पर काफी सारी जानकारियाँ दर्शाई जा सकती हैं।

वास्तव में 1:50,000 के पैमाने का अर्थ होता है नक्शे पर 1 सेन्टीमीटर, ज़मीन के 50,000 सेन्टीमीटर को दर्शाता है। 50,000 सेन्टीमीटर को यदि किलोमीटर में बदलेंगे तो वह 50 किलोमीटर नहीं वरन आधा किलोमीटर होता है।

इसी तरह संदर्भ की बरसों पुरानी एक भूल की ओर भी आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। इस भूल की ओर मेरा ध्यान कुछ महीने पहले शुक्र पारगमन संबंधी लेख पढ़ते हुए गया।

संदर्भ के अंक 48, में जून 2004 के शुक्र पारगमन पर आमोद कारखानिस द्वारा लिखा गया लेख 'दुनिया को नापना: एक पत्थर और धागे के ज़रिए' पुनः पढ़ने को आतुर हुआ, और उसे पढ़ा भी। आप तो समझ गए होंगे क्योंकि इस साल 6 जून 2012 को शुक्र पारगमन का नज़ारा जो देखना था। इस बार लेख ज़्यादा महत्वपूर्ण व सार्थक लगा। इसके लिए लेखक तथा संपादक दोनों को कोटी-कोटी बधाई। साथ ही एक शिकायत भी - इस लेख के पेज 15 पर प्रकाशित बॉक्स 'पारगमन कब-कब में' लिखा है कि अगला पारगमन 5 जून 2012 को होगा। जबकि इस साल पारगमन 6 जून 12 को हुआ।

संजय कुमार तिवारी
अज़ीम प्रेमजी इंस्टिट्यूट
धमतरी, छत्तीसगढ़

भूल सुधार

अंक 82 में में प्रकाशित लेख टीएलएमः ज़रूरत या विवशता के पृष्ठ संख्या 60-61 पर प्रकाशित चित्रों की फोटोग्राफर दिपाली शुक्ला हैं। भूलवश उनका नाम इन फोटोग्राफ के साथ नहीं था।

– संपादक मंडल

शैक्षणिक संदर्भ के विगत वर्षों में प्रकाशित लेखों को पढ़ने के लिए एकलव्य की वेबसाइट **www.eklavya.in** पर विज़िट कीजिए।